



अल्पबुद्धि से अज्ञानतापूर्वक...
 वीतराग परमात्मा की
 प्राणभरी आज्ञा विरुद्ध
 इस पत्रिका में कुछ भी लिखा गया हो,
 विवेचित किया गया हो,
 तो त्रिविध त्रिविध मिच्छामी दुक्कडम्...

महोत्सव में आप होंगे- हम सब होंगे,
 दिव्यलोक में आयेगे देव-देवेन्द्र...
 आग्रहभरा आत्मीय-आमन्त्रण है,
 स्वीकारें सविनय सादर जयजिनेन्द्र...